Sl.No. :

नामांक Roll No.

No. of Questions – 3

SS–34–1–T.W.(Hindi)(Supp.)

No. of Printed Pages – 07

यहाँ से काटिए

उच्च माध्यमिक पूरक परीक्षा, 2017

SENIOR SECONDARY SUPPLEMENTARY EXAMINATION, 2017

हिन्दी टंकण लिपि

(TYPEWRITING HINDI)

समय : 1 **घण्टा**

पूर्णांक : 40

प्रश्न पत्र को खोलने के लिए यहाँ फाड़ें

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देश :

1) परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न पत्र पर नामांक अनिवार्यत: लिखें।

2) प्रत्येक कागज के एक तरफ टंकण करें।

3) प्रत्येक प्रश्न को नये पृष्ठ से आरम्भ करना है।

4) प्रत्येक लाइन के बीच में द्विगुणित अवकाश (Double Spacing) देकर टंकण करना है।

5) प्रत्येक प्रश्न के लिए 2 अंक सजावट के निर्धारित है।

यहाँ से काटिए

1) निम्न अवतरण को टंकित कीजिए :

अंक

टंकण –18

सजावट – 2

कुल – 20

भीतर बैठा देवता

जीवन का स्वरूप बड़ा अद्‌भुत है। ज्ञानीजन जिसे सुख कहते हैं, आम आदमी उस सुख के प्रति अपने आपको उदासीन बनाये रखता है और जिसे वे दुःख कहते हैं, साधारण जन को उसी में सुख की अनुभूति होती है। न जाने दुनिया को उसमें कौन–सा रस निर्झरित होता हुआ दिखाई देता है। हर आदमी उस दुःख को सुख मानकर उसमे डूबा हुआ है। जिसे ज्ञानीजन खुजली का रोग कहकर उसके खुजलाने को जीवन के लिये त्रासदी समझते हैं, आम आदमी जानते बूझते हुए भी उसे खुजलाने को आतुर है। जीवन का काव्य कुछ है ही ऐसा।

जीवन का गणित कुछ ऐसा विचित्र है जो सत्य है, वह असत्य लगता है और जो असत्य है, उसी में ही व्यक्ति को सत्य की झलक दिखाई देती है। तभी तो ज्ञानी की दृष्टि में जीवन कुछ और होता है और मूढ़ ओर अज्ञानी की

नजर में जिन्दगी के मायने कुछ और ही होते हैं। जीवन का विज्ञान ही कुछ ऐसा है कि जो बहुत दूर है,वह बहुत नजदीक दिखाई देता है। हर कोई व्यक्ति चाँद – सितारों तक पहुंचना चाहता है। सूरज, चाँद और कोटि – कोटि ग्रह–नक्षत्रों की रश्मियाँ आदमी को इतना आकर्षित और आह्लादित करती हैं कि आदमी एकटक उन्हें निहारता रहता है और जीवन की रोशनी भी उनमें तलाशता है। अपने ही चरणों के पास खिल रहे गुलाब या जूही के फूलों पर उसकी नजर नहीं जाती। क्या किया जाये, दूर के ढोल सुहावने जो लगते हैं।

ये ठीक है कि सितारों पे घूम आये हम, मगर किसे है सलीका जमीं पे चलने का। कोटि–कोटि नक्षत्रों तक हमारी दृष्टि जा रही है, पर स्वयं का नक्षत्र अदृश्य ही रहा। सितारों तक पहुंचने वाले लोग, अच्छा होगा जमीन पर चलने का, जमीन पर जीने का सलीका आत्मसात करलें, जीने की कला उनके हाथ लग जाये। स्वयं के सत्य से वंचित रहकर, औरों का सत्य सुन – पढ़ – जान भी लिया, तो उन सत्यों को भी तर्क में, वाद–विवाद में उलझाकर असत्य कर डालोगे।

बाहर की चका चौंध ने, बाहर की चमक – दमक ने मनुष्य के भीतर के प्रकाश को ऐसा लगता है कि बुझा ही डाला। निश्चित तौर पर बाहर के प्रकाश का मूल्य है, पर भीतर के प्रकाश की अर्थवत्ता उससे कहीं अधिक है। बाहर का अंधेरा भी कुछ काम का नहीं है और भीतर का तमस भी कोई अर्थ नहीं रखता। समृध्दि तो भीतर भी होनी चाहिये और बाहर भी होनी चाहिये, अन्यथा जीवन सुखी नहीं हो सकता। इसके लिए हरआदमी महावीर की तरह

सब कुछ छोड़–छाड़ कर नंगे बदन जंगलों की ओर नहीं जा सकता; हर आदमी बुध्द की तरह अपनी पत्नी या पुत्र को त्याग कर किसी वृक्ष के नीचे साधना या आराधना के लिए नहीं बैठ सकता। उन्होंने तो जान ही लिया था कि बाहर की समृध्दि कोई अर्थ नहीं रखती। वे राजकुमार थे, उन्होंने समृध्दि को जीया था। आप लोगों ने परम समृध्दि को नहीं जीया, इसलिए बोध –वृक्ष के नीचे आसन जमाने पर जब कोई कंकड़ भी तुम्हें आ चुभेगा तो तुम तिलमिला उठोगे। अपने आप को ही उलाहना दोगे कि घर मे शान्ति से बैठे थे, कहाँ झोली–डंडा लेकर आ गये। बुध्द जैसे लोग तो पहचान ही लेते हैं कि कंकड़ जितनी पीड़ा देते हैं, उससे भी अधिक पीड़ा तो राजमहल के मखमल के गलीचे देते हैं। शरीर को तो भले ही सुख देते हों, लेकिन अन्तआत्मा तक उनकी कोई भी सुख–शान्ति नहीं पहुँची। भीतर में सुख–शान्ति के फूल न खिले, तो जगत के सुख हमें सूकून कहाँ दे पाये।

जीवन में बाह्य समृध्दि होनी चाहिये और आन्तरिक सम्पन्नता भी चाहिये। दुनिया में ज़ितने भी शास्त्र हैं, वे एकपक्षीय मिलेंगे। वे शास्त्र या तो बाह्य समृद्धि की चर्चा करेंगे या केवल आन्तरिक समृद्धि की ही। अगर लेनिन या मार्क्स को देखें तो वे व्यक्ति की बाह्य समृद्धि के शास्त्र रचेंगे।

2) **निम्नलिखित पत्र को यथोचित रूप से टंकित कीजिए :**

अंक

टंकण – 8

सजावट – 2

कुल – 10

एस. बी. आई. लाईफ इंसोरेन्स कम्पनी लिमिटेड

के/45, स्टेट बैंक टावर,

शिवाजी मार्ग,

मुम्बई –200007

दिनांक –15 नवम्बर, 2016

प्रिय पॉलिसीधारक,

जैसा कि पॉलिसीधारकों ने सूचित किया है कि उन्हें अपने बीमा पॉलिसी का प्रिमियम बैंकों के माध्यम से जमा करवाने में परेशानी हो रही है, क्योंकि बैंकों में नोट बदलवाने एवं अप्रचलित नोटों को जमा करवाने वाले बैंक ग्राहकों की भीड़ लगी रहती है।अत: बैंककर्मी भी इसी कार्य को प्राथमिकता दे रहे हैं।

आपकी इस असुविधा को ध्यान में रखते हुए वित्त मन्त्रालय, भारत सरकार के दिशा निर्देशानुसार बीमा कम्पनी ने यह निर्णय लिया है कि :–

1. आप आपनी प्रिमियम राशि जिनकी अदायगी तिथि नवम्बर अथवा दिसम्बर, 2016 की है, वे अपना बीमा प्रिमियम बिना दण्ड के 31 जनवरी, 2017 तक जमा करा देवें। आपकी पॉलिसी नियमित मानी जावेगी और इस पर कोई अतिरिक्त प्रभार कम्पनी की ओर से वसुल नहीं किया जावेगा।

2. आप अपने प्रिमियम की राशि चैक के माध्यम से हमारी किसी भी शाखा में जमा करा सकते हैं अथवा ऑन लाईन बैंकिंग सुविधा के द्वारा किसी भी व्यापारिक बैंक में भी जमा करा सकते हैं।

आपकी सुविधा एवं आपके पूर्ण सहयोग लिये हम पूर्णरूप से तत्पर हैं।

सधन्यावाद।

आपका शुभेच्छु,

(एस. कृष्णामेनन)

महाप्रबन्धक

एस. बी. आई.लाईफ इन्सोरेन्स क. लि.

3) **निम्न सारणी को यथोचित रूप देकर टंकित कीजिए :**

अंक

टंकण – 8

सजावट – 2

कुल – 10

रोजगार पद्धति की क्षेत्रवार एवम् स्थितिवार प्रवृतियाँ (प्रतिशत में)

क्षेत्र	1972-73	1982-83	1993-94	1999-2000
प्राथमिक	74.3	71.6	64	60.4
द्वितीयक	10.9	11.5	16	15.8
सेवा	14.8	16.9	20	23.8
योग	100	100	100	100
स्वनियोजित	61.4	57.3	54.6	52.6
नियमितवेतनभोगी	15.4	13.8	13.6	14.6
दैनिक मजदूर	23.2	28.9	31.8	32.8
योग	100	100	100	100

ⓘⓘⓘ

DO NOT WRITE ANYTHING HERE